Sab Se Aakhiri Nabi (Hindi)

सब से आख़िरी नबी

सफ़हात 48

- अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की अहम्मिय्यत 07
- झूटे नबी से मो'जिज़ा तलब करना कैसा ? 08
- एक ग़ैबी बुज़ुर्ग का अनोखा वाक़िआ 13
- ख़त्मे नुबुव्वत के बारे में 40 हदीसें 19
- मौला अ़ली की शाने अ़ज़मत निशान 29

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाजे़ खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुजु़र्गी वाले । (مُستَطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **सब से आखि़री नबी** صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल आखि़र **1444** हि., अक्तूबर **2022** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

येह रिसाला (**सब से आख़िरी नबी** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद–1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم

या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 43 सफ़ह़ात का रिसाला : "**सब से आख़िरी नबी** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم" पढ़ या सुन ले उस को बे ह़िसाब बख़्श कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने सब से आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बना । اٰمين بِجاہِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत **दुरूद शरीफ़** पढ़े होंगे । (اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج٥ ص٢٧٧ حديث٨١٧٥)

ह़ज़रते जिब्रील सलाम कहते हैं (वाक़िआ़)

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिब्रील ने ह़ाज़िर हो कर मुझे यूं सलाम किया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ظَاهِرُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بَاطِنُ, मैं ने कहा : ऐ जिब्रील ! येह सिफ़ात तो **अल्लाह** पाक की हैं कि उसी को लाइक़ हैं मुझ सी मख़्लूक़ की क्यूंकर हो सकती हैं ? जिब्रील ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक ने आप को इन सिफ़ात से फ़ज़ीलत दी और तमाम अम्बियाओ मुरसलीन

www.dawateislami.net

(عَلَيْهِمُ السَّلَام) पर इन से ख़ुसूसिय्यत बख़्शी और अपने नाम व वस्फ़ (या'नी सिफ़त व ख़ूबी) से आप का नाम व वस्फ़ निकाला है। **अल्लाह** पाक ने आप का नाम "**अव्वल**" रखा क्यूं कि आप सब अम्बियाए किराम से पैदाइश के ए'तिबार से अव्वल या'नी पहले हैं और आप का नाम "**आख़िर**" रखा क्यूं कि आप सब अम्बियाए किराम के ज़माने से आख़िर में तशरीफ़ लाने वाले और आप **आख़िरी उम्मत के आख़िरी नबी** हैं। **अल्लाह** पाक ने आप का नाम "**बातिन**" रखा क्यूं कि **अल्लाह** पाक ने अपने नाम के साथ आप का नाम सुनहरे नूर से अ़र्श के पाए पर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पैदाइश से दो हज़ार साल पहले हमेशा हमेशा के लिये लिखा फिर मुझे आप पर दुरूद शरीफ़ भेजने का हुक्म दिया तो मैं ने आप पर हज़ार साल दुरूद और हज़ार साल सलाम भेजा यहां तक कि **अल्लाह** करीम ने आप को ख़ुश ख़बरी और डर सुनाता और **अल्लाह** की त़रफ़ उस के हुक्म से बुलाता और चमका देने वाला आफ़्ताब बना कर भेजा और **अल्लाह** पाक ने आप का नाम "**ज़ाहिर**" रखा कि उस ने आप को तमाम दीनों पर ग़लबा (SUPREMACY) अ़ता फ़रमाया और आप की शरीअ़त व फ़ज़ीलत को तमाम ज़मीनो आस्मान वालों पर ज़ाहिर किया तो कोई ऐसा न रहा जिस ने आप पर दुरूद न भेजा हो, **अल्लाह** पाक आप पर दुरूद (या'नी रह़मत) भेजे। पस आप का रब मह़मूद (या'नी ता'रीफ़ किया गया) है और आप "**मुह़म्मद**" (या'नी ता'रीफ़ किये गए हैं), आप का रब "**अव्वलो आख़िर, ज़ाहिरो बातिन**" है और आप भी (अपने रब की अ़ता से) "अव्वलो आख़िर, ज़ाहिरो बातिन" हैं। (येह सुन कर) मैं ने कहा : तमाम ता'रीफ़ें उसी के लिये हैं जिस ने मुझे तमाम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) पर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई यहां तक कि मेरे नाम व सिफ़त में (भी सब पर फ़ज़ीलत दी) ।

(شرح الشفاء للقاری ج۱ص۵۱۰, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 663 से ख़ुलासा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه हम आख़िरी नबी के उम्मती हैं

ऐ आ़शिक़ाने आख़िरी नबी ! अल्लाह पाक का हम गुनाहगारों पर बड़ा फ़ज़्लो एह़सान है कि उस ने हमें अपने प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मती बनाया । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيم हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सारे रसूलों और नबियों से अफ़्ज़ल हैं और **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की रह़मत से आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में आप की उम्मत पिछली तमाम उम्मतों से बेहतर है ।

सारे रसूलों से तुम बरतर, तुम सारे नबियों के सरवर
सब से बेहतर उम्मत वाले, صلّی اللہ علیک وسلّم

(सामाने बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

अहम तरीन फ़र्ज़

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** पाक का **सब से आख़िरी नबी** मानना ज़रूरिय्याते दीन में से है, जो इस का इन्कार करे या इस में ज़र्रा बराबर भी शक करे वोह इस्लाम से ख़ारिज, काफ़िर व मुरतद है । **अल्लाह** पाक पारह 22 **सूरतुल अह़ज़ाब** आयत 40 में इर्शाद फ़रमाता है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** पाक उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : मुह़म्मद तुम्हारे मर्दों में किसी के बाप नहीं हैं लेकिन **अल्लाह** के रसूल हैं और सब नबियों के आख़िर में तशरीफ़ लाने वाले हैं और **अल्लाह** सब कुछ जानने वाला है।

शर्ह़े आयत

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में आयत के इस ह़िस्से "وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ" की तफ़्सीर में लिखते हैं : या'नी मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **आख़िरी नबी** हैं कि अब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नबी नहीं आएगा और नुबुव्वत आप पर ख़त्म हो गई है और आप की नुबुव्वत के बा'द किसी को नुबुव्वत नहीं मिल सकती ह़त्ता कि जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام नाज़िल होंगे तो अगर्चे नुबुव्वत पहले पा चुके हैं मगर नुज़ूल के बा'द शरीअ़ते मुह़म्मदिय्यह पर आ़मिल (या'नी अ़मल करने वाले) होंगे और इसी शरीअ़त पर ह़ुक्म करेंगे और आप (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही के क़िब्ले या'नी का'बे शरीफ़ की त़रफ़ नमाज़ पढ़ेंगे, (याद रहे !) ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का आख़िरी नबी होना क़त़्ई (या'नी यक़ीनी) है (और येह क़त़्इय्यत (या'नी यक़ीनी होना) कुरआनो ह़दीस से साबित है), कुरआने मजीद की सरीह़ (या'नी साफ़) आयत भी मौजूद है और अह़ादीस तवातुर[1]

1 : ह़दीसे मुतवातिर : ऐसी ह़दीस जिस के रिवायत करने वाले हर ज़माने में इतनी कसरत से हों कि उन का झूट (या'नी ख़िलाफ़े वाक़िआ़ बात) पर इत्तिफ़ाक़ कर लेना आ़दतन मुह़ाल (या'नी ना मुम्किन) हो। (मुन्तख़ब ह़दीसें, से 25 से ख़ुलासा)

की ह़द तक पहुंची हुई हैं, इन सब से साबित है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **सब से आख़िरी नबी** हैं और आप के बा'द कोई नबी होने वाला नहीं। जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत के बा'द किसी और को नुबुव्वत मिलना मुम्किन जाने वोह ख़त्मे नुबुव्वत का मुन्किर, काफ़िर और इस्लाम से ख़ारिज है।

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 763, सिरातुल जिनान, जि. 8, स. 47 मुल्तक़त़न व मुलख़्ख़सन)

ख़ातम का मत़लब

अलह़ाज मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ख़ातम" ख़त्म से मुश्तक़ (या'नी निकला) है, और ख़त्म के मा'ना मोह्र (SEAL) और **आख़िरी** के हैं, बल्कि मोह्र को भी ख़ातम इसी वासित़े कहते हैं कि वोह मज़्मून के आख़िर में लगाई जाती है या येह कि जब किसी थैले पर मोह्र (SEAL) लग गई तो अब कोई चीज़ बाहर की अन्दर और अन्दर की बाहर नहीं जा सकती, इसी त़रह़ येह आख़िरी मोह्र लग चुकी, बाग़े नुबुव्वत का आख़िरी फूल खिल चुका, ख़ुद हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ातमुन्नबिय्यीन के मा'ना बयान फ़रमाए हैं कि لَانَبِیَّ بَعْدِیْ या'नी मेरे बा'द कोई नबी नहीं। (शाने ह़बीबुर्रह़मान, स. 171)

बा'द आप के हरगिज़ न आएगा नबी नया
वल्लाह ! ईमां है मेरा, ऐ आख़िरी नबी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

जानवर भी आख़िरी नबी मानते हैं (वाक़िआ़)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि क़बीलए

बनी सुलैम का एक आ'राबी (या'नी अ़रब के दीहात में रहने वाला) नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर कहने लगा : मैं उस वक़्त तक आप पर ईमान नहीं लाऊंगा, जब तक मेरी येह **"गोह"** आप पर ईमान न लाए। येह कह कर उस ने गोह (या'नी छिपकली से मिलते जुलते उस जानवर) को आप के सामने डाल दिया। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने गोह को पुकारा तो उस ने لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ (या'नी मैं ह़ाज़िर हूं और फ़रमां बरदारी के लिये तय्यार हूं) इतनी बुलन्द आवाज़ से कहा कि तमाम ह़ाज़िरीन ने सुन लिया। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : तेरा मा'बूद (या'नी इ़बादत के लाइक़) कौन है? गोह ने जवाब दिया : मेरा मा'बूद वोह है कि जिस का अ़र्श आस्मान में है और उसी की बादशाही ज़मीन में है, उस की रह़मत जन्नत में है और उस का अ़ज़ाब जहन्नम में है। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : ऐ गोह! येह बता कि मैं कौन हूं? गोह ने बुलन्द आवाज़ से कहा : اَنْتَ رَسُوْلُ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَخَاتَمُ النَّبِيِّيْنَ, या'नी आप **अल्लाहु रब्बुल आ़लमीन** के रसूल और **आख़िरी नबी** हैं। जिस ने आप को सच्चा माना वोह काम्याब हो गया और जिस ने आप को झुटलाया वोह ना मुराद हो गया। येह देख कर आ'राबी इस क़दर मुतअस्सिर हुवा कि फ़ौरन कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया।

(معجم اوسط ج٤ ص٢٨٣ حديث٥٩٩٦ مختصراً)

ऐ बला! बे ख़िरदीये कुफ़्फ़ार, रखते हैं ऐसे के ह़क़ में इन्कार
कि गवाही हो गर उस को दरकार, बे ज़बां बोल उठा करते हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : बला : मुसीबत । **बे ख़िरदी :** बे वुकूफ़ी । **दरकार :** चाहिये ।

शर्हे कलामे रज़ा : अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को न मानने वाले किस क़दर बे वुकूफ़ व नादान हैं, ह़ालां कि अगर हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सच्चे और आख़िरी नबी होने की गवाही देना चाहें तो बे ज़बान जानवर वग़ैरा भी गवाही देने के लिये बोल पड़ते हैं ।

अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की अहम्मिय्यत

ऐ आ़शिक़ाने आख़िरी नबी ! अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत से मुराद येह मानना है कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से **आख़िरी नबी** हैं । **अल्लाह** पाक ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात पर सिल्सिलए नुबुव्वत को ख़त्म फ़रमा दिया है । हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ज़िन्दगी के ज़माने से ले कर क़ियामत तक कोई नया नबी नहीं हो सकता । ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के तशरीफ़ लाने से अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा क्यूं कि ख़ातमुन्नबिय्यीन के मा'ना येह हैं कि मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ुहूर के बा'द किसी को नुबुव्वत न मिलेगी, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पहले के नबी हैं, आप ब ह़ैसिय्यते नबी अपनी शरीअ़त की तब्लीग़ नहीं फ़रमाएंगे बल्कि **अल्लाह** पाक के सब से **आख़िरी नबी**, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शरीअ़त पर ही अ़मल कराएंगे । गोया आप हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उम्मती होने की ह़ैसिय्यत से आएंगे । (تفسیرنسفی ص۹۴۳)

वग़ैरा से ख़ुलासा) याद रहे ! किसी नबी को नुबुव्वत मिलने के बा'द उस से नुबुव्वत ज़ाइल (या'नी ख़त्म) न होगी बल्कि हमेशा के लिये उन की नुबुव्वत क़ाइम रहती है। "फ़तावा रज़विय्या" जिल्द 29 सफ़ह़ा 110 ता 111 पर है : "ह़ाशा ! न कोई रसूल रिसालत से मा'ज़ूल (या'नी जुदा, बर त़रफ़) किया जाता है न सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام रिसालत से मा'ज़ूल (या'नी अ़लाह़दा) होंगे, न हुज़ूर का उम्मती होना रिसालत के ख़िलाफ़।" (फ़तावा रज़विय्या) अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत का वोही दरजा है जो अ़क़ीदए तौह़ीद का है या'नी दोनों ही ज़रूरिय्याते दीन से हैं। लिहाज़ा मुसल्मान के लिये जिस त़रह़ **अल्लाह** पाक को एक मानना ज़रूरी है ऐसे ही उस के प्यारे ह़बीब ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **सब से आख़िरी नबी** मानना भी ज़रूरी है।

कोई दलील नहीं मांगी जाएगी

ह़ज़रते इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : जो कोई हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द नबी के आने का दा'वा करे तो उस से कोई दलील नहीं मांगी जाएगी बल्कि उस (शख़्स के अ़क़ीदे) का इन्कार किया जाएगा क्यूं कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा चुके हैं : لَا نَبِيَّ بَعْدِيْ या'नी मेरे बा'द कोई नबी नहीं। (تاویلات اهلِ السنة ج٨ ص ٣٩٦)

झूटे नबी से मो'जिज़ा त़लब करना कैसा ?

"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" सफ़ह़ा 134 से अ़र्ज़ व इर्शाद सुनिये, **अ़र्ज़ :** (क्या) झूटे मुद्दइये नुबुव्वत (या'नी नबी होने का झूटा दा'वा

करने वाले) से मो'जिज़ा त़लब किया जा सकता है ? **इर्शाद :** अगर मुद्दइये नुबुव्वत (या'नी नबी होने का दा'वा करने वाले) से इस ख़याल से कि इस का इ़ज्ज़ (या'नी नाकामी और हार) ज़ाहिर हो मो'जिज़ा त़लब करे तो ह़रज नहीं, और अगर तह़क़ीक़ के लिये मो'जिज़ा त़लब किया कि येह मो'जिज़ा भी दिखा सकता है या नहीं, तो फ़ौरन काफ़िर हो गया।

(فتاوٰی عالمگیری ج ۲ ص ۲۶۳ ماخوذاً)

لَا نَبِیَّ بَعْدِیْ

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़दीसे मुतवातिर "لَا نَبِیَّ بَعْدِیْ" या'नी "मेरे बा'द कोई नबी नहीं" से तमाम उम्मते मर्ह़ूमा (या'नी वोह उम्मत जिस पर **अल्लाह** पाक की रह़मत हो) ने सलफ़न व ख़लफ़न (या'नी अगलों पिछलों सभी ने) हमेशा येही मा'ना समझे कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बिला तख़्सीस (या'नी बिग़ैर किसी को ख़ास किये) तमाम अम्बिया में **आख़िरी नबी** हुए, हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के साथ या हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बा'द क़ियामे क़ियामत (या'नी क़ियामत क़ाइम होने) तक किसी को नुबुव्वत मिलनी मुह़ाल (या'नी ना मुम्किन) है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 333)

सब अम्बिया के हो तुम्हीं सरदार ला जरम[1]
तुम सा नहीं है दूसरा, ऐ आख़िरी नबी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1 : **ला जरम :** यक़ीनन

ईमान की सलामती की फ़िक्र न करने का नुक़्सान

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक इन्सान के लिये सब से क़ीमती बल्कि अनमोल चीज़ उस का ईमान है, **अल्लाह** पाक की रह़मत से जिसे ईमान की दौलत ह़ासिल है वोह माल के ए'तिबार से अगर्चे ग़रीब हो मगर ईमान की दौलत से मह़रूम करोड़ों, अरबों पती शख़्स से भी बड़ा मालदार है जब कि दौलते इस्लाम से मह़रूम मालदार दर ह़क़ीक़त मुफ़्लिसो नादार (या'नी ग़रीब) है और مَعَاذَاللّٰه ثُمَّ مَعَاذَاللّٰه इसी ह़ाल (या'नी कुफ़्र की ह़ालत) में मरने वाला हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम में रहेगा। हर मुसल्मान को चाहिये कि हमेशा ईमान की सलामती और ख़ातिमा बिलख़ैर की बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में दुआ करता रहे। इस पुर फ़ितन दौर में जहां नेक आ'माल करने में बेह़द सुस्ती आ चुकी है वहीं ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र भी बहुत कम नज़र आती है, आए दिन नए नए फ़ितने मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से मुसल्मानों के ईमान को खोखला करने में मसरूफ़ हैं, ईमान की सलामती की फ़िक्र निहायत ज़रूरी है, चाहे सारी ज़िन्दगी नेकियों में गुज़ारी हो, लेकिन ख़ुदा ना ख़्वास्ता ख़ातिमा ईमान पर न हुवा तो हमेशा हमेशा के लिये दोज़ख़ में रहना होगा। फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيْم या'नी "आ'माल का दारो मदार ख़ातिमे पर है।" (بُخاری ج ٤ ص٢٧٤ حدیث ٦٦٠٧)

अ़त्तार है ईमां की ह़िफ़ाज़त का सुवाली
ख़ाली नहीं जाएगा येह दरबारे नबी से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

ईमान की फ़िक्र न करना तश्वीश नाक है

तश्वीश और सख़्त तश्वीश की बात येह है कि जिस त़रह़ दुन्यवी दौलत की ह़िफ़ाज़त के मुआ़मले में ग़फ़्लत उस के ज़ाएअ़ होने का सबब बन जाती है, इस से भी ज़ियादा सख़्त मुआ़मला ईमान का है। "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" सफ़ह़ा 495 पर है, उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : "जिस को सल्बे ईमान (या'नी ईमान छिन जाने) का ख़ौफ़ न हो नज़्अ़ (या'नी मौत) के वक़्त उस का ईमान सल्ब हो जाने (या'नी छिन जाने) का शदीद ख़त़रा है।"

मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़त़ा से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

सुब्ह़ मोमिन तो शाम को काफ़िर

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "उन फ़ितनों से पहले नेक आ'माल के सिल्सिले में जल्दी करो ! जो अंधेरी रात के ह़िस्सों की त़रह़ होंगे। एक आदमी सुब्ह़ को मोमिन होगा और शाम को काफ़िर होगा और शाम को मोमिन होगा और सुब्ह़ को काफ़िर होगा। नीज़ अपने दीन को दुन्यावी साज़ो सामान के बदले फ़रोख़्त कर देगा।" (مُسلِم ص٦٩ حديث ٣١٣)

शर्ह़े ह़दीस

शारेह़े मुस्लिम, ह़ज़रते इमाम शरफ़ुद्दीन नववी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : इस ह़दीसे पाक में नेक आ'माल जल्दी जल्दी करने पर उभारा गया है, इस से पहले कि बन्दा वोह नेक काम न कर सके और उन लगातार फ़ितनों में मश्ग़ूल हो जाए जो बहुत ज़ियादा

हो जाएंगे जैसे सख़्त अंधेरी रात में इस क़दर अंधेरा छा जाए कि चांद बिल्कुल नज़र न आए, हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन सख़्त फ़ितनों की एक क़िस्म (KIND) को यहां बयान फ़रमाया है और वोह इस क़दर सख़्त होंगे कि एक ही दिन में इन्सान का दिल बदल जाएगा और येह बहुत बड़ी तब्दीली है। (شرح مسلم للنووی ج۲ص۱۳۳)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! किस क़दर बद नसीब है वोह शख़्स जो आ़रिज़ी (TEMPORARY) दुन्या के फ़ानी (या'नी ख़त्म हो जाने वाले) ऐ़शो राह़त के लिये مَعَاذَاللہ अपने ईमान का सौदा कर दे, ईमान बेच कर कुफ़्र ख़रीद ले और जन्नत के बजाए जहन्नम को अपना ठिकाना बना ले। तमाम आ़शिक़ाने आख़िरी नबी को चाहिये कि वोह येह मस्नून दुआ़ : يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِیْ عَلٰی دِیْنِكَ या'नी "ऐ दिलों को फेरने वाले ! मेरे दिल को अपने दीन पर साबित क़दम रख।" ज़रूर मांगा करें। **अल्लाह** करीम अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हमारा ईमान सलामत रखे और हमें दीने इस्लाम पर इस्तिक़ामत (या'नी मज़बूती) अ़त़ा फ़रमाए और हमें ईमानो आ़फ़ियत के साथ सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के साए में जल्वए मह़बूब में शहादत और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

हैं ग़ुलाम आप के जितने, करो दूर उन से फ़ितने
बुरी मौत से बचाना, मदनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** पाक के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

एक ग़ैबी बुज़ुर्ग का अनोखा वाक़िआ

सहाबिये रसूल ह़ज़रते नज़्ला बिन मुआविया رَضِیَ اللهُ عَنْه 300 मुहाजिरीन व अन्सार के साथ हुल्वाने इराक़ से माले ग़नीमत (या'नी ग़ैर मुस्लिमों से लड़ाई में हाथ आने वाला माल) ला रहे थे कि एक पहाड़ के क़रीब शाम हुई तो ह़ज़रते नज़्ला رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अज़ान दी, जब आप ने اَللّٰهُ اَكْبَر اَللّٰهُ اَكْبَر कहा तो पहाड़ से एक आवाज़ आई, कोई कह रहा था **:** ऐ नज़्ला! तुम ने बहुत बड़े अ़ज़मत वाले की बड़ाई बयान की! जब आप ने اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहा, तो जवाब आया **:** ऐ नज़्ला! तुम ने ख़ालिस तौह़ीद बयान की, जब आप ने اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه कहा तो आवाज़ आई **: येह ऐसे नबी बना कर भेजे गए हैं कि इन के बा'द कोई नबी नहीं,** येह डर सुनाने वाले हैं, येही हैं जिन की ख़ुश ख़बरी हमें ह़ज़रते ईसा बिन मरयम عَلَيْهِ السَّلَام ने दी थी, इन्ही की उम्मत के आख़िर में क़ियामत क़ाइम होगी। सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते नज़्ला رَضِیَ اللهُ عَنْه ने जब حَیَّ عَلَی الصَّلٰوة कहा तो जवाब आया **:** नमाज़ एक फ़र्ज़ है, ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जो इस की त़रफ़ चले और इस की पाबन्दी रखे। जब حَیَّ عَلَی الْفَلَاح कहा तो आवाज़ आई **:** मुराद को पहुंचा जो नमाज़ के लिये आया और इस पर हमेशगी इख़्तियार की, मुराद को पहुंचा जिस ने मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी की। जब आप ने कहा **:** اَللّٰهُ اَكْبَر اَللّٰهُ اَكْبَر، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه ! तो आवाज़ आई **:** ऐ नज़्ला! तुम ने पूरा इख़्लास ह़ासिल कर लिया तो **अल्लाह** पाक ने इस के सबब तुम्हारा जिस्म दोज़ख़ पर ह़राम फ़रमा दिया। ह़ज़रते नज़्ला رَضِیَ اللهُ عَنْه नमाज़ के बा'द खड़े हुए और इर्शाद

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

फ़रमाया : ऐ ख़ूब सूरत अन्दाज़ में बात करने वाले ! हम ने तुम्हारी बात सुनी, तुम फ़रिश्ते हो या जिन्न या रिजालुल ग़ैब (या'नी नज़रों से पोशीदा इन्सान) ? हमारे सामने ज़ाहिर हो कर हम से बात करो कि हम **अल्लाह** पाक और उस के नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के सफ़ीर (REPRESENTATIVE) हैं। येह कहना था कि पहाड़ से रोशन चेहरे और सफ़ेद दाढ़ी वाले एक बूढ़े बुज़ुर्ग ज़ाहिर हुए जिन्हों ने सफ़ेद ऊन की एक चादर ओढ़ी हुई थी, आते ही उन्हों ने सलाम किया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ, वहां मौजूद ह़ाज़िरीन ने जवाब दिया, ह़ज़रते नज़्ला رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक आप पर रह़्म करे आप कौन हैं ? उन्हों ने जवाब दिया : मैं ज़ुरैब बिन सर्मला हूं। **अल्लाह** पाक के नबी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने मुझे इस पहाड़ में ठहराया था और आस्मानों से अपने दोबारा तशरीफ़ लाने तक मेरे ज़िन्दा रहने की दुआ़ की थी, (एक और रिवायत में है कि) फिर उन्हों ने पूछा : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहां हैं ? ह़ज़रते नज़्ला رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : वोह पर्दा फ़रमा गए (या'नी उन का इन्तिक़ाल शरीफ़ हो गया है)। इस पर वोह बुज़ुर्ग बहुत ज़ियादा रोए, फिर कहा : उन के बा'द कौन (ख़लीफ़ा) हुए ? फ़रमाया : (ह़ज़रते) अबू बक्र (सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه)। पूछा वोह कहां हैं ? फ़रमाया : (उन का भी) इन्तिक़ाल हो गया है। कहा : फिर कौन ख़लीफ़ा हुए ? फ़रमाया : (ह़ज़रते) उ़मर (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه)। कहा : "अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को मेरा सलाम अ़र्ज़ करें और येह भी अ़र्ज़ कीजियेगा कि ऐ उ़मर ! हुकूमत को सीधी रखिये, लोगों के क़रीब रहिये, क़ियामत

क़रीब आ गई है और ऐ उ़मर ! जब येह बातें उम्मते मुह़म्मदिय्यह में पैदा हो जाएं तो फिर दुन्या से चले जाने (या'नी मौत) ही में आ़फ़ियत है (उन में से चन्द येह हैं :) (1) जब लोग अपना नसब बदलने (या'नी ख़ानदानी सिल्सिला मसलन न होने के बा वुजूद ख़ुद को सय्यिद, सिद्दीक़ी, अ़लवी वग़ैरा कहने) लगें (2) छोटों पर बड़े शफ़्क़त न करें (3) नेकी का हुक्म न दें और बुराई से मन्अ़ न करें (4) माल व दुन्या कमाने की ख़ातिर (दीनी) इ़ल्म ह़ासिल करें (5) बारिशें ब कसरत हों (6) औलाद वबाले जान बन जाए (7) मस्जिदों को ख़ूब सूरत बनाने लगें, मगर वोह नमाज़ियों से ख़ाली हों (8) रिश्वत आ़म हो जाए (9) मज़बूत़ इमारतें बनने लगें (10) ख़्वाहिशात की पैरवी करने लगें (11) दुन्या के बदले दीन बेचने लगें (12) रिश्तेदारों से रिश्ता तोड़ना आ़म होने लगे (13) सूद फैल जाए और (14) मालदार होना ही इ़ज़्ज़त का सबब बन जाए। जब येह सारी बातें आ़म होने लगें तो फिर भाग कर किसी पहाड़ के ग़ार में छुप जाना और वहीं पर ख़ुदा की याद में मसरूफ़ हो जाने ही में आ़फ़ियत (या'नी सलामती) होगी।" येह कह कर वोह बुज़ुर्ग ग़ाइब हो गए।

ह़ज़रते नज़्ला رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने येह वाक़िआ़ सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को तफ़्सील से लिख कर भेज दिया और उन्हों ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की त़रफ़ लिखा। जवाब में ह़ज़रत फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को हुक्म दिया कि वोह अपने साथ मुहाजिरीन व अन्सार सह़ाबए किराम को ले कर उस पहाड़ पर तशरीफ़

ले जाएं और अगर वोह बुज़ुर्ग दोबारा मिलें तो उन से मेरा सलाम कहें। ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ चार ह़ज़ार मुहाजिरीन व अन्सार सह़ाबए किराम को साथ ले कर उस पहाड़ पर पहुंचे और 40 दिन तक मुसल्सल **अज़ान** देते रहे मगर कोई आवाज़ या जवाब न आया। (تاریخ بغداد ج ۱۰ ص ۲۰۴، دلائل النبوۃ للبیہقی ج ۵ ص ۴۲۵ تا ۴۲۷, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 691 मुलख़्ख़सन) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

सब सह़ाबा का है येह अ़क़ीदा अटल

हैं येह ख़ैरुल वरा ख़ातमुल अम्बिया

ईमान अफ़रोज़ मौत (मदनी बहार)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत पर इस्तिक़ामत (या'नी मज़बूती) पाने और सलामतिये ईमान की अहम्मिय्यत का ज़ेह्न बनाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, **"दा'वते इस्लामी"** के प्यारे प्यारे दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। اِنْ شَآءَ اللّٰہُ الْکَرِیْم ऐसी बरकतें नसीब होंगी कि ज़िन्दगी के साथ साथ मौत भी क़ाबिले रश्क होगी, आप का ज़ौक़ो शौक़ बढ़ाने के लिये एक **मदनी बहार** पेशे ख़िदमत है : सगे मदीना عُفِیَ عَنہ के पास एक इस्लामी भाई बनाम मुह़म्मद वसीम अ़त़्त़ारी आया करते थे। बेचारे के उल्टे हाथ में केन्सर हो गया और डॉक्टरों ने वोह हाथ काट डाला। उन के अ़लाक़े के एक इस्लामी भाई ने सगे मदीना को बताया कि वसीम भाई शिद्दते दर्द के सबब सख़्त तक्लीफ़ में हैं। मैं इ़यादत के लिये अस्पताल पहुंचा और

तसल्ली देते हुए कुछ इस त़रह़ कहा : उल्टा हाथ (LEFT HAND) कट गया इस का ग़म मत करो, اَلْحَمْدُ لِلّٰه सीधा हाथ (RIGHT HAND) तो महफ़ूज़ है और सब से बड़ी सआ़दत येह कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه **"ईमान"** भी सलामत है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه मैं ने उन्हें बड़ा सब्र करने वाला पाया, सिर्फ़ मुस्कुराते रहे यहां तक कि बिस्तर से उठ कर मुझे बाहर तक छोड़ने आए। आहिस्ता आहिस्ता हाथ की तक्लीफ़ तो ख़त्म हो गई मगर बेचारे का दूसरा इम्तिह़ान शुरूअ़ हो गया और वोह येह कि सीने में पानी भर गया, सख़्त तक्लीफ़ में दिन कटने लगे। आख़िर एक दिन तक्लीफ़ बहुत बढ़ गई, ज़िक्रुल्लाह शुरूअ़ कर दिया, **अल्लाह, अल्लाह** की आवाज़ से कमरा गूंजता रहा, त़बीअ़त बहुत ज़ियादा तश्वीश नाक हो गई थी, डॉक्टर के पास ले जाने की कोशिश की गई मगर इन्कार कर दिया, दादीजान ने (उन का सर) महब्बतो शफ़्क़त से गोद में ले लिया, ज़बान पर कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) जारी हुवा और तक़रीबन 22 सालह मुह़म्मद वसीम अ़त्त़ारी फ़ौत हो गए। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ جब मर्ह़ूम को ग़ुस्ल के लिये ले जाने लगे तो अचानक चादर चेहरे से हट गई, मर्ह़ूम का चेहरा गुलाब के फूल की त़रह़ खिला हुवा था, ग़ुस्ल के बा'द चेहरे की बहार में मज़ीद निखार आ गया। तदफ़ीन के बा'द आ़शिक़ाने रसूल ना'तें पढ़ रहे थे, क़ब्र से ख़ुश्बूओं की लपटें आने लगीं मगर जिस ने सूंघी उस ने सूंघी। घर के किसी फ़र्द ने इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में मर्ह़ूम मुह़म्मद वसीम अ़त्त़ारी को फूलों से सजे हुए कमरे में देखा, पूछा : कहां रहते हो ? हाथ से एक कमरे की त़रफ़ इशारा करते हुए कहा : येह

मेरा मकान है, यहां मैं बहुत ख़ुश हूं। फिर एक सजे हुए बिस्तर पर लैट गए। मर्हूम के अब्बूजान ने ख़्वाब में अपने आप को वसीम अत्तारी की क़ब्र के पास पाया, यकायक क़ब्र खुली और मर्हूम सर पर इमामा सजाए हुए सफ़ेद कफ़न पहने बाहर आए, कुछ बातचीत की और फिर क़ब्र में दाख़िल हो गए और क़ब्र दोबारा बन्द हो गई।

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

तू ने इस्लाम दिया तू ने जमाअ़त में लिया

तू करीम अब कोई फिरता है अ़तिय्या तेरा

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : फिरता है : वापस होता है। **अ़तिय्या :** इन्आ़म।

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह ! आप ने ब सूरते इस्लाम हमें इन्आ़म से नवाज़ा, अपनी उम्मत में शामिल फ़रमाया, आप करम फ़रमाने वाले हैं, क्या आप दीने इस्लाम का इन्आ़म देने के बा'द इसे वापस भी ले सकते हैं ? (हरगिज़ नहीं)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب صَلَّی اللهُ علٰی محمَّد

40 हदीसें पहुंचाने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मेरी उम्मत तक पहुंचाने के लिये दीन के मुतअ़ल्लिक़ 40 हदीसें याद कर लेगा तो उसे **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन आ़लिमे दीन की हैसिय्यत से उठाएगा और बरोज़े क़ियामत मैं उस का शफ़ीअ़ (या'नी शफ़ाअ़त करने वाला) व गवाह होउंगा। (شُعَبُ الْاِیمان ج ۲ ص ۲۷۰ حدیث ۱۷۲۶) इस फ़रमाने आ़ली से मुराद

चालीस अहादीस का लोगों तक पहुंचाना है अगर्चे वोह याद न हों। (اشعةُ اللّمعات ج۱ص۱۸۶) ! हदीसे पाक में बयान की गई फ़ज़ीलत पाने की निय्यत से हमारे प्यारे प्यारे आक़ा **मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** के **आख़िरी नबी** होने के मुतअ़ल्लिक़ **40 अहादीस** पेश की जाती हैं :

ख़त्मे नुबुव्वत के बारे में 40 हदीसें

नूरानी महल की आख़िरी ईंट

﴾1﴿ मेरी और मुझ से पहले अम्बिया की मिसाल उस शख़्स की तरह है जिस ने एक बहुत हसीनो जमील घर बनाया, मगर उस के एक कोने में एक ईंट की जगह छोड़ दी, लोग उस के गिर्द घूमने लगे और तअ़ज्जुब से येह कहने लगे कि इस ने येह ईंट क्यूं न रखी ? फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं वोह (आख़िरी) ईंट हूं और नबियों में **आख़िरी नबी** हूं। (بخاری ج۲ص۴۸۴ حدیث ۳۵۳۵)

﴾2﴿ दूसरी रिवायत में येह अल्फ़ाज़ भी हैं : "उस ईंट की जगह (को पुर करने वाला) मैं हूं, मैं आया तो नबियों (के सिल्सिले) को ख़त्म (या'नी मुकम्मल) कर दिया।" (مسلم ص۹۶۶ حدیث ۵۹۶۳)

हैं वोह क़स्रे नुबुव्वत की ईंट आख़िरी   क़ौले शाहे दना ख़ातमुल अम्बिया

शर्हे हदीस : मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْه इस हदीसे पाक की शर्ह में लिखते हैं : سُبْحٰنَ اللّٰه ! कैसी प्यारी मिसाल है "**नुबुव्वत**" गोया नूरानी महल है, हज़राते अम्बियाए किराम (عَلَيهِمُ السَّلَام) गोया इस की नूरानी ईंटें, हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) गोया इस महल की आख़िरी ईंट

हैं जिस पर इस इ़मारत की तक्मील (COMPLETION) हुई। इस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **आख़िरी नबी** हैं, आप के ज़माने में या आप के बा'द कोई नबी नहीं। जैसे इस आख़िरी ईंट से वोह मह़ल मुकम्मल (COMPLETE) हो जावेगा और इस के बा'द उस में किसी ईंट की जगह न रहेगी यूं ही मुझ से नुबुव्वत का मह़ल मुकम्मल हो गया अब किसी नबी की गुन्जाइश न रही। ख़याल रहे कि ईसा عَلَيْهِ السَّلَام क़रीबे क़ियामत ज़मीन पर तशरीफ़ लाएंगे मगर वोह पहले के नबी हैं, बा'द के नबी नहीं (और) येह ईंट पहले की लगी हुई है, नीज़ वोह अब नुबुव्वत की शान से (या'नी अपनी नुबुव्वत के अह़काम जारी करने के लिये) न आएंगे बल्कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के उम्मती हो कर। ख़याल रहे कि आख़िरी बेटा वोह है जिस के बा'द कोई बेटा पैदा न हो येह ज़रूरी नहीं कि पिछले सारे बेटे मर चुके हों। हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के "**आख़िरी नबी**" होने के मा'ना येह हैं कि आप के ज़माने में और आप के ज़माने के बा'द कोई नबी पैदा न होगा, अगर पहले के कोई नबी (ज़ाहिरी तौ़र पर भी) ज़िन्दा हों तो (इस में) मुज़ायक़ा नहीं। चार नबी अब तक (ज़ाहिरी तौ़र पर भी) ज़िन्दा हैं : दो ज़मीन पर ह़ज़रते ख़िज़्र और ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِمَا السَّلَام और दो आस्मान पर ह़ज़रते इदरीस और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِمَا السَّلَام, इन की ज़िन्दगी हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के ख़ातमुन्नबिय्यीन होने के ख़िलाफ़ नहीं। हुज़ूर अव्वल मख़्लूक़ हैं और **आख़िरी नबी** हैं। (मिरआत, जि. 8, स. 7)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

ख़ातमुन्नबिय्यीन के मा'ना

शारेह़े बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़ातमुन्नबिय्यीन के मा'ना ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने "**आख़िरी नबी**" बताया है और येह मा'ना सह़ाबए किराम ने बताया और इसी पर उम्मत का क़त़्ई यक़ीनी इज्माअ़ (या'नी इत्तिफ़ाक़) है, इस लिये अगर कोई शख़्स येह कहे कि ख़ातमुन्नबिय्यीन के मा'ना आख़िरी नबी अ़वाम का ख़याल है और इस में कोई फ़ज़ीलत नहीं और येह मक़ामे मद्ह़ (या'नी ता'रीफ़) में ज़िक्र करने के क़ाबिल नहीं वोह बिला शुबा काफ़िर है। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 4, स. 510 मुख़्तसरन)

छे फ़ज़ीलतें

﴾3﴿ मुझे छे वज्ह से अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) पर फ़ज़ीलत दी गई है (1) मुझे जामेअ़ कलिमात अ़त़ा किये गए हैं (2) मेरी मदद रो'ब से की गई है (3) मेरे लिये ग़नीमतों को ह़लाल कर दिया गया है (4) तमाम रूए ज़मीन को मेरे लिये त़हारत व नमाज़ की जगह बना दिया गया है (5) मुझे तमाम मख़्लूक़ की त़रफ़ (नबी बना कर) भेजा गया है (6) और मुझ पर नबियों (के सिल्सिले) को ख़त्म किया गया है। (مسلم ص۲۱۰حدیث ۱۱۶۷)

शर्ह़े ह़दीस : पांच छे का ज़िक्र फ़रमाना ह़द बन्दी के लिये नहीं, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को बे शुमार ख़ूबियों में बुज़ुर्गी दी गई है। (मुझे जामेअ़ कलिमात दिये गए हैं) की वज़ाह़त में मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : क़ुरआने मजीद के अल्फ़ाज़ भी जामेअ़ हैं और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के अपने अल्फ़ाज़ भी निहायत जामेअ़ हैं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** पाक उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

कि लफ़्ज़ थोड़े, मा'ना मत़लब बहुत ज़ियादा। देखो हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "आ'माल का ए'तिबार निय्यतों से है, दीन की ह़क़ीक़त ख़ैर ख़्वाही है, मोमिने कामिल वोह है जो बेकार और ग़ैर मुफ़ीद बातें छोड़ दे।" छोटे छोटे जुम्ले हैं मगर सारी शरीअ़तो त़रीक़त इन में भरी है। (मेरी मदद रो'ब से की गई है) की वज़ाह़त में मुफ़्ती साह़िब फ़रमाते हैं : जो दुश्मन मुझ से जंग करने आएं, अभी वोह एक माह के रास्ते पर मुझ से दूर होते हैं कि उन के दिल में मेरी हैबत छा जाती है अगर्चे वोह जंग करें मगर मरऊ़ब हो कर। (मुझे तमाम मख़्लूक़ की त़रफ़ (नबी बना कर) भेजा गया है) की वज़ाह़त करते हुए मुफ़्ती साह़िब ने तह़रीर किया है : सारी मख़्लूक़ जानदार हो या बेजान, आ़क़िल (या'नी अ़क़्ल वाली) हो या ग़ैर आ़क़िल (या'नी बे अ़क़्ल) सब पर हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की नुबुव्वत, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़काम (ह़स्बे ह़ालत) नाफ़िज़ हैं। (और मुझ पर नबियों (के सिल्सिले) को ख़त्म किया गया है) इस की शर्ह़ में मुफ़्ती साह़िब ने लिखा है : मैं **आख़िरी नबी** हूं जिस पर दौरे नुबुव्वत ख़त्म हो गया मेरे ज़माने में या मेरे बा'द कोई नबी नहीं। (मिरआत, जि. 8, स. 10, 11 से मुख़्तसरन)

जिन चार नबियों : ह़ज़रते ख़िज़्र, ह़ज़रते इल्यास, ह़ज़रते इदरीस व ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِمُ السَّلَام को अभी ज़ाहिरी त़ौर पर वफ़ात पेश नहीं आई, बेशक वोह नबी ही हैं, मगर सब से आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मब्ऊ़स होने के बा'द अपनी लाई हुई शरीअ़त की तब्लीग़ नहीं करेंगे।

मैं आ़क़िब हूं

﴿4﴾ मेरे पांच नाम हैं, मैं मुह़म्मद हूं, मैं अह़मद हूं, मैं माही (या'नी मिटाने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

वाला) हूं कि **अल्लाह** पाक मेरे ज़रीए कुफ़्र मिटा देगा, मैं ह़ाशिर हूं कि लोग मेरे क़दमों पर (या'नी मेरे पीछे क़ियामत के रोज़[1]) इकठ्ठे होंगे और मैं आ़क़िब हूं। (بخاری ج ۲ ص ٤٨٤ حدیث ٣٥٣٢) ताबेई बुज़ुर्ग, इमाम ज़ोहरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : आ़क़िब वोह है जिस के बा'द कोई नबी नहीं। (مسلم ص٩٨٥ حدیث ٦١٠٧)

शहे अम्बिया है, ख़ुदा का है प्यारा वोह नबियों में सुन लो ! नबी आख़िरी है
मुह़म्मद है अह़मद, है सुल्त़ाने बत़्ह़ा वोह नबियों में सुन लो ! नबी आख़िरी है

सारे नबियों के सरदार

﴾5﴿ मैं रसूलों का क़ाइद हूं और येह बात बत़ौरे फ़ख़्र नहीं कहता, मैं तमाम नबियों का ख़ातम (या'नी आख़िरी नबी) हूं और येह बात बत़ौरे फ़ख़्र नहीं कहता और मैं सब से पहला शफ़ाअ़त करने वाला और सब से पहला शफ़ाअ़त क़बूल किया गया हूं और येह बात फ़ख़्र के त़ौर पर नहीं कहता।

(دارمی ج١ ص٤٠ حدیث ٤٩)

शर्ह़े ह़दीस : ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (मैं रसूलों का क़ाइद हूं) की वज़ाह़त में "मिरआत" में है : हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) जन्नत में सब नबियों से पहले जाएंगे और सारे नबी हुज़ूर के पीछे पीछे होंगे, इस लिह़ाज़ से हुज़ूर क़ाइदुल मुरसलीन (या'नी रसूलों के क़ाइद) हैं।

(मिरआत, जि. 8, स. 28)

ख़ातमुन्नबिय्यीन

﴾6﴿ बेशक मैं **अल्लाह** पाक के नज़्दीक उस वक़्त ख़ातमुन्नबिय्यीन लिखा गया जब कि (ह़ज़रते) आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) अपनी मिट्टी में गुंधे हुए थे।

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ج٨ص١٠٦ حدیث ٦٣٧٠)

مدینہ

1 : नुज़्हतुल क़ारी, जि. 4, स. 508

www.dawateislami.net

﴾7﴿ बेशक मैं आख़िरुल अम्बिया (या'नी सब नबियों में आख़िरी नबी) हूं और मेरी मस्जिद आख़िरुल मसाजिद है। (مسلم ص٥٥٣ حدیث٣٣٧٦)

आख़िरुल मसाजिद के मा'ना

﴾8﴿ दूसरी रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : "मैं सब नबियों में आख़िरी नबी हूं और मेरी मस्जिद मसाजिदे अम्बिया की आख़िर है।" (الفردوس ج١ ص٤٥ حدیث ١١٢) मत़लब येह है कि ह़ज़रते मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द न कोई नबी पैदा होगा और न किसी नबी की और मस्जिद बनेगी।

जन्नत में दाख़िल हो जाओ

﴾9﴿ ऐ लोगो ! बेशक मेरे बा'द कोई नबी नहीं है और तुम्हारे बा'द कोई उम्मत नहीं है। ख़बरदार ! तुम लोग अपने रब की इबादत करो, पांच नमाज़ें पढ़ो, रमज़ान के महीने के रोज़े रखो, अपने मालों की ख़ुशदिली के साथ ज़कात अदा करो और अपने ह़ाकिमों की (जाइज़) फ़रमां बरदारी करो तो तुम लोग अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओ। (معجم کبیر ج٨ ص١١٥ حدیث ٧٥٣٥)

मेरे बा'द हरगिज़ कोई नबी नहीं

﴾10﴿ बनी इसराईल में अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام हुकूमत किया करते थे, जब एक नबी की वफ़ात होती तो दूसरा नबी उन का ख़लीफ़ा होता, (लेकिन याद रखो !) **मेरे बा'द हरगिज़ कोई नबी नहीं है,** हां ! अ़न्क़रीब ख़ुलफ़ा होंगे और कसरत से होंगे। (بُخاری ج٢ ص٤٦١ حدیث ٣٤٥٥)

शर्ह़े ह़दीस : या'नी न तो मेरे ज़माने में कोई नबी है जो मेरी मौजूदगी में मेरा ख़लीफ़ा हो जैसे हारून عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام

की मौजूदगी में कुछ रोज़ के लिये आ़रिज़ी (या'नी TEMPORARY) ख़लीफ़ा हुए जब मूसा عَلَيْهِ السَّلَام तौरैत लेने तूर पर तशरीफ़ ले गए। और न मेरे बा'द कोई नबी है जो मेरा मुस्तक़िल (या'नी PERMANENT) ख़लीफ़ा हो, लिहाज़ा मेरे ख़ुलफ़ा मेरे दीन के सलाती़न (या'नी बादशाह) हैं और बाति़नी ख़ुलफ़ा ह़ज़राते औलिया व उ़लमा। (मिरआत, जि. 5, स. 346)

﴾11﴿ नुबुव्वत से कुछ बाक़ी न रहा, सिर्फ़ बिशारतें बाक़ी हैं। सह़ाबए किराम ने अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **!** बिशारतें क्या हैं ? इर्शाद फ़रमाया **:** "अच्छे अच्छे ख़्वाब।" (بخاری ج٤ ص٤٠٤ حدیث ٦٩٩٠)

﴾12﴿ मेरे बा'द नुबुव्वत में से कुछ बाक़ी न रहेगा मगर बिशारतें, (या'नी) अच्छा ख़्वाब कि बन्दा ख़ुद देखे या उस के लिये दूसरे को दिखाया जाए।

(مسند امام احمد بن حنبل ج٩ ص٤٥٠ حدیث ٢٥٠٣١)

﴾13﴿ बेशक रिसालत व नुबुव्वत ख़त्म हो गई, तो मेरे बा'द न कोई रसूल है और न नबी। (ترمذی ج٤ ص١٢١ حدیث٢٢٧٩)

﴾14﴿ मैं मुह़म्मद हूं, मैं अह़मद हूं, मैं रह़मत का नबी हूं, मैं तौबा का नबी हूं, मैं सब में **आख़िरी नबी** हूं, मैं ह़ाशिर हूं,[1] मैं जिहादों का नबी हूं।

(شمائل ترمذی ص٢١٥ حدیث٣٦١, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 657)

उन के हर नामो निस्बत पे नामी दुरूद
उन के हर वक़्तो ह़ालत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

1 : "ह़ाशिर" की तफ़्सील ह़दीस 4 पर है।

www.dawateislami.net

﴾15﴿ मैं अह़मद हूं, मुह़म्मद हूं और मुक़फ़्फ़ा हूं। (معجم اوسط ج۱ص۶۲۲حدیث۲۲۸۰ سے مختصراً) मुक़फ़्फ़ा के मा'ना हैं : **आख़िरुल अम्बिया** या'नी सब नबियों में **आख़िरी नबी।** (الاستذکار لابن عبد البر ج ۲ ص ۳۶۲)

﴾16﴿ हम ज़माने में सब से आख़िरी और क़ियामत में सब से पहले हैं।

(بخاری ج۱ص۳۰۳حدیث ۸۷۶)

सब से पहले जन्नत में जाने वाली उम्मत

शारेहे मुस्लिम, ह़ज़रते इमाम नववी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में लिखते हैं : उ़लमाए किराम ने फ़रमाया : इस ह़दीस का मत़लब येह है कि हम दुन्या में तशरीफ़ लाने के ए'तिबार से आख़िर में हैं फ़ज़ीलत और जन्नत में दाख़िले के ए'तिबार से पहले हैं लिहाज़ा येह उम्मत पिछली तमाम उम्मतों से पहले जन्नत में दाख़िल होगी।

(شرحِ مسلم للنووی ج۶ ص۱۴۲)

﴾17﴿ हम दुन्या में सब के बा'द और क़ियामत के दिन सब से पहले होंगे, जिन का फ़ैसला क़ियामत के दिन सब से पहले होगा। (مسلم ص۳۳۲حدیث۱۹۸۲)

ख़ूबियों भरी मुख़्तसर बात

﴾18﴿ **अल्लाह** पाक ने मेरे लिये कमाले इख़्तिसार फ़रमाया, तो हम सब से आख़िरी और क़ियामत के दिन हम सब से पहले हैं। (دارمی ج۱ص۴۲ حدیث ۵۴ ملخّصاً)

ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (कमाले इख़्तिसार फ़रमाया) के एक मा'ना येह हैं : मुझे इख़्तिसारे कलाम (या'नी ख़ूबियों भरी मुख़्तसर बात करने का कमाल) बख़्शा कि थोड़े लफ़्ज़ हों और मा'ना कसीर।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 30, स. 210)

﴾19﴿ बेशक मैं भेजा गया दरियाए रह़मत खोलता और नुबुव्वतो रिसालत ख़त्म करता हुवा। (شعب الایمان ج٤ص٣٠٨حدیث٥٢٠٢, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 661)

﴾20﴿ मैं सब नबियों से पहले पैदा हुवा और सब के बा'द भेजा गया।

(مسند الشامیین ج٤ص٣٤حدیث٢٦٦٢)

﴾21﴿ मैं **आख़िरी नबी** हूं और तुम आख़िरी उम्मत हो।

(ابن ماجه ج٤ ص٤٠٤ حدیث ٤٠٧٧)

सब नबियों से अफ़्ज़ल होने का सबब (वाक़िआ)

ह़ज़रते सह्ल बिन सालेह़ हमदानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने ह़ज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से पूछा : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो सब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के बा'द भेजे गए फिर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام पर फ़ज़ीलतो बरतरी कैसे ह़ासिल हुई ? आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने जब रोज़े मीसाक़ (या'नी वा'दे के दिन) आदमियों की पीठों से उन की औलादें निकालीं और उन्हें ख़ुद उन पर गवाह बना कर फ़रमाया : क्या मैं तुम्हारा रब नहीं ? तो सब से पहले रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़र्ज़ किया : بَلٰى या'नी "हां क्यूं नहीं।" इस वज्ह से नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام पर फ़ज़ीलतो बरतरी ह़ासिल हुई, ह़ालां कि आप सब के बा'द दुन्या में भेजे गए। (خصائص کبریٰ ج١ص٧)

क़रनों बदली रसूलों की होती रही चांद बदली का निकला हमारा नबी
क्या ख़बर कितने तारे खिले छुप गए पर न डूबे न डूबा हमारा नबी

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾22﴿ सब अम्बिया में पहले नबी (ह़ज़रते) आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) हैं और सब से आख़िरी नबी (ह़ज़रते) मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हैं।

(الاوائل للطبرانی ص۳۹ حدیث ۱۳)

﴾23﴿ لَوْ كَانَ بَعْدِیْ نَبِیٌّ لَكَانَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ या'नी अगर मेरे बा'द कोई नबी होता तो उ़मर होते। (ترمذی ج۵ ص ۳۸۵ حدیث ۳۷۰۶)

शर्ह़े ह़दीस : इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की वज़ाह़त में फ़रमाते हैं : या'नी आप (رَضِیَ اللهُ عَنْه) की फ़ित़रत इतनी कामिल थी कि अगर दरवाज़ए नुबुव्वत बन्द न होता तो महज़ फ़ज़्ले इलाही से वोह नबी हो सकते थे कि अपनी ज़ात के ए'तिबार से नुबुव्वत का कोई मुस्तह़िक़ नहीं। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 373)

﴾24﴿ अबू बक्र अम्बिया (व मुरसलीन) के सिवा तमाम लोगों से अफ़्ज़ल हैं। (الکامل لابن عدی ج٦ ص٤٨٤)

30 झूटे नबी होंगे

﴾25﴿ अ़न्क़रीब मेरी उम्मत में 30 कज़्ज़ाब (या'नी बहुत बड़े झूटे) होंगे, उन में से हर एक गुमान (या'नी ख़याल) करेगा कि वोह नबी है ह़ालां कि मैं ख़ातमुन्नबिय्यीन (या'नी आख़िरी नबी) हूं और मेरे बा'द कोई नबी नहीं है।

(ابوداؤد ج٤ ص١٣٢ حدیث ٤٢٥٢)

शर्ह़े ह़दीस

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में लिखते हैं : येह 30 झूटे नबी वोह हैं जिन्हें लोगों ने नबी मान लिया और उन का फ़साद फैल गया, दूसरे क़िस्म के मुद्दइये नुबुव्वत (या'नी नबी

होने का दा'वा करने वाले) जिन्हें किसी ने न माना वोह बक्वास कर के मर गए, वोह तो बहुत हैं।

(मुफ़्ती साहिब मज़ीद फ़रमाते हैं :) मा'लूम हुवा कि ख़ातमुन्नबिय्यीन के मा'ना हैं **आख़िरी नबी** कि इस के ज़माने में और इस के बा'द कोई नबी न बने। इस मा'ना पर उम्मत का इज्माअ़ (या'नी इत्तिफ़ाक़) है, जो कहे : इस के मा'ना "आख़िरी नबी" नहीं बल्कि अस्ली नबी हैं, वोह काफ़िर है। (मिरआत, जि. 7, स. 219, 220 से ख़ुलासा)

﴾26﴿ मेरी उम्मत में कज़्ज़ाब व दज्जाल (इन्तिहाई झूटे और धोकेबाज़) होंगे (और) उन में से चार औ़रतें भी होंगी और मैं **आख़िरी नबी** हूं, मेरे बा'द कोई नबी नहीं। (معجم کبیر ج۳ص۱۶۹ حدیث ۳۰۲۶)

मौला अ़ली की शाने अ़ज़मत निशान

﴾27﴿ हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए तबूक की त़रफ़ तशरीफ़ ले जाते वक़्त ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को मदीने में छोड़ा तो आप ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे औ़रतों और बच्चों में छोड़े जाते हैं ! फ़रमाया : क्या तुम इस पर राज़ी नहीं कि तुम यहां मेरी नियाबत (या'नी नाइब होने की हैसिय्यत) में ऐसे रहो जैसे मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) जब अपने रब से कलाम के लिये ह़ाज़िर हुए तो हारून (عَلَيْهِ السَّلَام) को अपनी नियाबत (या'नी नाइब होने की हैसिय्यत) में छोड़ गए थे, हां येह फ़र्क़ है कि हारून (عَلَيْهِ السَّلَام) नबी थे, मैं जब से नबी हुवा दूसरे के लिये नुबुव्वत नहीं।

(مسلم ص۱۰۰۶ حدیث ۶۲۱۸، ترمذی ج۵ص۴۰۷ حدیث ۳۷۴۵)

शर्हे ह़दीस

शारेहे बुख़ारी ह़ज़रते मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) जब कोहे तूर पर तौरात लेने जाने लगे तो ह़ज़रते हारून (عَلَيْهِ السَّلَام) को आ़रिज़ी तौ़र पर (TEAMPRORAY) अपनी वापसी तक के लिये अपना जा नशीन बनाया था जो उन की वापसी के बा'द ख़त्म हो गया, इस तम्सील (या'नी मिसाल) ने ज़ाहिर कर दिया कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली को आ़रिज़ी तौ़र पर तबूक से वापसी तक के लिये अपना नाइब बनाया था (और) येह नियाबत भी मह़दूद थी सिर्फ़ इन्तिज़ामी मुआ़मलात तक ।

(नुज़्हतुल क़ारी, जि. 4, स. 602)

﴾28﴿ अ़ली मुझ से ऐसे हैं जैसे मूसा से हारून (कि भाई भी हैं और नाइब भी) मगर ''لَا نَبِيَّ بَعْدِیْ'' मेरे बा'द कोई नबी नहीं । (تاریخ بغداد ج۷ص۴۶۳)

﴾29﴿ मैं मुह़म्मद, नबिय्ये उम्मी (या'नी दुन्या में किसी से पढ़े बिग़ैर पढ़ने वाला नबी) हूं (इसे तीन बार फ़रमाया) और ''لَا نَبِيَّ بَعْدِیْ'' मेरे बा'द कोई नबी नहीं । (مسند امام احمد ج۲ص۶۶۶حدیث ۷۰۰۰)

﴾30﴿ मैं ने जो कुछ चाहा **अल्लाह** पाक ने मुझे अ़त़ा फ़रमाया मगर मुझ से येह फ़रमाया गया कि तुम्हारे बा'द कोई नबी नहीं ।

(السنة لابن ابی عاصم ص۳۰۳حدیث ۱۳۴۸)

ऐ ख़त्मे रुसुल, मक्की मदनी
कौनैन में तुम सा कोई नहीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

तू ने सच कहा

﴾31﴿ फ़रिश्ते क़ब्र में मुर्दे से सुवाल करेंगे : "तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? और तेरे नबी कौन हैं ?" वोह कहता है : मेरा रब **अल्लाह** है जिस का कोई शरीक नहीं और मेरा दीन इस्लाम है और मेरे नबी (हज़रते) **मुहम्मद** (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हैं और वोह सब से **आख़िरी नबी** हैं। फ़रिश्ते कहते हैं : तू ने सच कहा। (ذکر الموت مع موسوعة للامام ابن ابی الدنیا ج٥ ص٤٧٤ حدیث ٢٥٤, शर्हुस्सुदूर (उर्दू), स. 130 मुख़्तसरन)

एक ख़्वाब की ता'बीर

﴾32﴿ हज़रते इब्ने ज़िम्ल رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के ख़्वाब की ता'बीर बयान करते हुए फ़रमाया : रही वोह ऊंटनी जिस को तुम ने ख़्वाब में देखा और येह कि मैं उसे चला रहा हूं तो इस से मुराद क़ियामत है, न मेरे बा'द कोई नबी होगा और न मेरी उम्मत के बा'द कोई उम्मत होगी। (دلائل النبوة للبیهقی ج٧ص ٣٨ مختصراً)

उन के आगे नूर दौड़ता होगा

﴾33﴿ बेशक **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन औरों से पहले (हज़रते) नूह (عَلَيْهِ السَّلَام) और उन की क़ौम को बुला कर फ़रमाएगा : तुम ने नूह को क्या जवाब दिया ? वोह कहेंगे : नूह (عَلَيْهِ السَّلَام) ने न हमें तेरी त़रफ़ बुलाया, न तेरा कोई हुक्म पहुंचाया, न कुछ नसीह़त की, न हां या ना का कोई हुक्म सुनाया। नूह (عَلَيْهِ السَّلَام) अ़र्ज़ करेंगे : इलाही ! मैं ने इन्हें ऐसी दा'वत दी जिस की ख़बर एक के बा'द एक सब अगलों पिछलों में फैल गई, यहां तक कि (वोह ख़बर) सब से **आख़िरी नबी** (हज़रते) अह़मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तक पहुंची,

उन्हों ने उसे लिखा और पढ़ा (या'नी क़ुरआने करीम में बयान हुवा जिसे लिखा और पढ़ा गया) और उस पर ईमान लाए और उस की तस्दीक़ फ़रमाई। **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : अह़मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) व उम्मते अह़मद को बुलाओ। तो **रसूलुल्लाह** (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और आप की उम्मत इस ह़ाल में **अल्लाह** पाक की बारगाह में ह़ाज़िर होंगे कि उन के आगे नूर दौड़ता होगा वोह नूह़ (عَلَيْهِ السَّلَام) की गवाही देंगे (या'नी तस्दीक़ करेंगे)।

(المستدرك ج٣ ص٤١٥ حديث ٤٠٦٦, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 690)

क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ आख़िरी नबी कहेगी

﴿34﴾ अव्वलीनो आख़िरीन मेरी ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करेंगे : "हुज़ूर आप **अल्लाह** पाक के रसूल और ख़ातमुल अम्बिया या'नी **आख़िरी नबी** हैं, हमारी शफ़ाअ़त फ़रमाइये।" (بخاری ج٣ ص٢٦٠ حديث ٤٧١٢ ملخصاً)

يَا شَفِيْعَ الْوَرٰى سَلَامٌ عَلَيْك　　يَا نَبِيَّ الْهُدٰى سَلَامٌ عَلَيْك

خَاتَمَ الْاَنْبِيَاء سَلَامٌ عَلَيْك　　سَيِّدَ الْاَصْفِيَاء سَلَامٌ عَلَيْك

अगर मुह़म्मद न होते तो मैं तुम्हें न बनाता

﴿35﴾ (ह़ज़रते) आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) से जब ख़त़ाए इज्तिहादी हुई, तो आप ने अ़र्श की त़रफ़ अपना सरे मुबारक उठाया और **अल्लाह** पाक की बारगाह में अ़र्ज़ किया : "**या अल्लाह** पाक ! मैं तुझे मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का वासित़ा दे कर सुवाल करता हूं कि मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा।" **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आदम ! तू ने मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को कैसे पहचाना ह़ालां कि मैं ने अभी उसे पैदा नहीं किया है ? ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام

ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** पाक! जब तू ने मुझे अपनी क़ुदरत से बनाया तो मैं ने सर उठा कर देखा तो अ़र्श के पायों पर لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ लिखा हुवा देखा तो मैं ने जान लिया कि तू ने उसी का नाम अपने नामे पाक के साथ मिलाया होगा जो तुझे तमाम जहान से ज़ियादा प्यारा है और तेरे नज़्दीक उस की बड़ी इ़ज़्ज़त है। **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आदम! तू ने सच कहा, बेशक वोह मुझे तमाम जहान से ज़ियादा प्यारा है, जब तू ने मुझे उस का वासित़ा दे कर सुवाल किया तो मैं ने तेरी ख़त़ा मुआ़फ़ फ़रमा दी وَلَوْلَا مُحَمَّدٌ مَا خَلَقْتُكَ या'नी अगर मुह़म्मद न होते तो मैं तुम्हें न बनाता।[1] त़बरानी की रिवायत में येह इज़ाफ़ा है : और वोह तेरी औलाद में **सब से आख़िरी नबी** है और उस की उम्मत तेरी औलाद में सब से आख़िरी उम्मत है। (معجم صغیر جزء ثانی ص۸۲, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 633)

वोह जो न थे तो कुछ न था, वोह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वोह जहान की, जान है तो जहान है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾36﴿ जब ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) जन्नत से हिन्द में उतरे तो घबराए, जिब्रील ने उतर कर अज़ान दी, जब नामे पाक आया ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) ने पूछा : मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) कौन हैं ? कहा : आप की औलाद में सब से **आख़िरी नबी**।

(ابن عساکر ج۷ ص۴۳۷ مختصراً, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 640)

[1]: المستدرک ج۳ص۵۱۷ حدیث ۴۲۸۶

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** पाक उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

तौरैत शरीफ़ में ज़िक्रे ख़ैर

﴾37﴿ (ह़ज़रते) मूसा (कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام) पर जब तौरैत शरीफ़ नाज़िल हुई तो आप ने उसे पढ़ा तो उस में इस उम्मत का ज़िक्र पाया तो बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मैं इस में एक उम्मत पाता हूं कि वोह ज़माने में सब से आख़िरी और मर्तबे में सब से पहली है, तो येह मेरी उम्मत कर दे। **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : येह अह़मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत है। (دلائل النبوة لابی نعیم ص۳۳حدیث ۳۱, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 633)

किताबे ह़ज़रते मूसा में वस्फ़ हैं उन के — किताबे ईसा में उन के फ़साने आए हैं
उन्हीं की ना 'त के नग़मे ज़बूर से सुन लो — ज़बाने क़ुरआं पे उन के तराने आए हैं

(सामाने बख़्शिश, स. 125)

सब से पहले और सब से आख़िरी

﴾38﴿ **अल्लाह** पाक ने जब (ह़ज़रते) आदम (सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام) को पैदा फ़रमाया और इन्हें इन के बेटे दिखाए गए तो आप ने उन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलतो मर्तबे के ए'तिबार से देखा और उन सब के आख़िर में बुलन्द व रोशन नूर देखा तो **अल्लाह** पाक की बारगाह में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** पाक ! येह कौन है ? फ़रमाया : येह तेरा बेटा "**अह़मद**" (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) है, येही अव्वल (या'नी पहला) है और येही **आख़िर** है और येही सब से पहला शफ़ीअ़ (या'नी शफ़ाअ़त करने वाला) और येही सब से पहला शफ़ाअ़त क़बूल किया गया। (دلائل النبوة للبیهقی ج۵ص۴۸۳، کنزالعمال ج۱۱ص۱۹۷حدیث۳۲۰۵۳, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 634)

ज़ात हुई इन्तिख़ाब वस्फ़ हुए ला जवाब
नाम हुवा मुस्तफ़ा तुम पे करोरों दुरूद

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

पहले और आख़िरी नबी

﴾39﴿ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : (मे'राज की रात) **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आस्मानों पर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से मुलाक़ात फ़रमाई तो सब ने **अल्लाह** पाक की ह़म्द (या'नी ता'रीफ़) बयान की और आख़िर में सब से आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आप सब **अल्लाह** पाक की ता'रीफ़ बयान कर चुके, अब मैं बयान करता हूं : "सब ता'रीफ़ें **अल्लाह** पाक के लिये हैं जिस ने मुझे सारे जहान के लिये रह़मत बना कर भेजा और सब लोगों के लिये ख़ुश ख़बरी और डर सुनाने वाला बना कर भेजा और मुझ पर क़ुरआने करीम नाज़िल फ़रमाया जिस में हर शै का रोशन बयान है और मेरी उम्मत को बेहतर उम्मत बनाया उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई, और इन्हीं को अव्वल और इन्हीं को आख़िर रखा और मेरे वासिते मेरा ज़िक्र बुलन्द फ़रमाया और मुझ से नुबुव्वत की इब्तिदा फ़रमाई और मुझ ही पर नुबुव्वत को ख़त्म फ़रमाया।" येह सुन कर ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से फ़रमाया : "इन बातों की वज्ह से मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम सब से अफ़्ज़ल हैं।" फिर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिद्रतुल मुन्तहा पर तशरीफ़ ले गए। फिर **अल्लाह** पाक ने आप से कलाम फ़रमाया और येह भी फ़रमाया : मैं ने तुझे सब नबियों से पहले पैदा किया और सब के बा'द भेजा और तुझे फ़ातेह़ व ख़ातम (या'नी खोलने वाला और सब से आख़िरी) किया।

(تفسیر طبری ج۸ ص۹ تا ۱۱ حدیث ۲۲۰۲۱, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 637 मुख़्तसरन व मुल्तक़त़न)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

तुम हो अव्वल, तुम हो आख़िर, तुम हो बातिन, तुम हो ज़ाहिर
हक़ ने बख़्शे हैं येह अस्मा, صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم

मेरे हुज़ूर के लब पर اَنَا لَهَا होगा

﴿40﴾ जब लोग तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से शफ़ाअ़त के मुआ़मले में मायूस हो जाएंगे तो ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के पास ह़ाज़िर हो कर शफ़ाअ़त की दरख़्वास्त पेश करेंगे, आप फ़रमाएंगे : मैं इस मन्सब का अह्ल नहीं, (ह़ज़रते) मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ातमुन्नबिय्यीन (या'नी सब नबियों में आख़िरी) हैं और यहां तशरीफ़ फ़रमा हैं। लोग मेरे हुज़ूर ह़ाज़िर हो कर शफ़ाअ़त चाहेंगे मैं फ़रमाऊंगा : "اَنَا لَهَا" या'नी में इस (काम) के लिये हूं।

(مسند ابو یعلی ج۲ص ۳٦۸ حدیث ۲۳۲٤, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 639 से ख़ुलासा)

कहेंगे और नबी "اِذْهَبُوْا اِلٰى غَيْرِىْ"
मेरे हुज़ूर के लब पर "اَنَا لَهَا" होगा

शर्ह़े कलामे ह़सन : रोज़े क़ियामत लोग नबियों की बारगाहों में शफ़ाअ़त की दरख़्वास्त करेंगे तो सभी फ़रमाएंगे : "मेरे सिवा किसी और के पास जाओ।" जब हर त़रह़ से मायूस हो कर **अल्लाह** के सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में शफ़ाअ़त की भीक लेने ह़ाज़िर होंगे तो इर्शाद होगा : (हां हां) मैं इस काम के लिये हूं।

दे दे शफ़ाअ़त की मुझे ख़ैरात ख़ैर से रोज़े क़ियामत बख़्शवा, ऐ आख़िरी नबी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

कुछ न छुपाया मगर..... (वाक़िआ़)

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते का'बुल अह़बार رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे

वालिद तौरैत शरीफ़ का इ़ल्म रखने वालों में सब से ज़ियादा इ़ल्म रखते थे, **अल्लाह** पाक ने जो कुछ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाया, उस का इ़ल्म मेरे वालिद के बराबर किसी को न था, वोह अपने इ़ल्म में से मुझ से कुछ भी न छुपाते थे, जब उन का आख़िरी वक़्त आया तो मुझे बुला कर कहा : ऐ मेरे बेटे ! तुझे मा'लूम है कि मैं ने अपने इ़ल्म में से कोई चीज़ तुझ से न छुपाई, मगर हां दो सफ़ह़ात (SHEETS) रखे हैं, उन में एक नबी का बयान है जिन के तशरीफ़ लाने का ज़माना क़रीब आ पहुंचा है, मैं ने इस ख़ौफ़ से तुझे उन दो सफ़ह़ों की ख़बर न दी कि शायद कोई (नबी होने का झूटा दा'वा करने वाला) निकल खड़ा हो और तू उस के पीछे चल पड़े, येह त़ाक़ तेरे सामने है, मैं ने इस में वोह सफ़ह़ात (SHEETS) रख कर ऊपर से मिट्टी लगा दी है, अभी उन सफ़ह़ात को न देखना, जब वोह नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाएंगे और अगर **अल्लाह** पाक तेरा भला चाहेगा तो तू ख़ुद ही उन के पीछे चलने वाला बन जाएगा, येह कह कर वोह फ़ौत हो गए। हम उन के दफ़्न से फ़ारिग़ हुए तो मुझे उन सफ़ह़ात के देखने का शौक़ हर चीज़ से ज़ियादा था, मैं ने त़ाक़ खोला और सफ़ह़ात निकाले तो क्या देखता हूं कि उन में लिखा है : مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ خَاتَمُ النَّبِيِّنَ لَا نَبِيَّ بَعْدَهٗ مَوْلِدُهٗ بِمَكَّةَ وَمُهَاجَرُهٗ بِطَيْبَةَ या'नी मुह़म्मद **अल्लाह** के रसूल हैं, आख़िरी नबी हैं उन के बा'द कोई नबी नहीं, उन की पैदाइश मक्के में और वोह मदीने की त़रफ़ हिजरत करने वाले हैं।

(خصائص کبریٰ ج ۱ ص ۲۵)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

वल्लाह ! ईमां है मेरा, ऐ आख़िरी नबी *बा'द आप के हरगिज़ न आएगा नबी नया*
तू ख़्वाब में जल्वा दिखा, ऐ आख़िरी नबी *है दस्त बस्ता सर झुका कर अ़र्ज़ सय्यिदी !*
आ जा समा जा घर बना, ऐ आख़िरी नबी *आलाइशों से पाक कर के मेरे दिल में तू*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सह़ाबा और ताबिईन के 5 इर्शादात

(1) दोनों कन्धों के दरमियान तह़रीर

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं **:** ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के दोनों कन्धों के दरमियान में लिखा हुवा है **:** "مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ خَاتَمُ النَّبِيِّيْن" या'नी **:** मुह़म्मद **अल्लाह** के रसूल और **आख़िरी नबी** हैं।

(مختصر تاریخ دمشق ج۲ ص۱۳۷, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 634)

(2) वोह जो न हों तो कुछ न हो

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं **:** ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ाज़िर हो कर हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह !** आप का रब इर्शाद फ़रमाता है **:** बेशक मैं ने तुम पर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को ख़त्म किया (या'नी तुम सब से आख़िरी नबी हो) और कोई ऐसा न बनाया जो तुम से ज़ियादा मेरे नज़्दीक इ़ज़्ज़त वाला हो, तुम्हारा नाम मैं ने अपने नाम से मिलाया कि जहां भी मेरा ज़िक्र किया जाए साथ ही साथ वहां तुम्हारा भी ज़िक्र किया जाए, बेशक मैं ने दुन्या और दुन्या वालों को इस लिये बनाया कि तुम्हारी इ़ज़्ज़त

और अपनी बारगाह में तुम्हारा मक़ामो मर्तबा उन पर ज़ाहिर करूं, और अगर तुम न होते तो मैं आस्मान व ज़मीन और जो कुछ इन में है बिल्कुल न बनाता ।

(مختصر تاریخ دمشق ج۲ص ۱۳۶، ۱۳۷ مختصراً, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 636)

है उन्हीं के दम क़दम की बाग़े आ़लम में बहार

वोह न थे आ़लम न था, गर वोह न हों आ़लम नहीं

अल्फ़ाज़ मआ़नी : दम क़दम से : वज्ह से । **बाग़े आ़लम :** दुन्या की रौनक़ें । **आ़लम :** दुन्या ।

शर्हे कलामे रज़ा : अल्लाह पाक के सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वज्ह से ही सारी दुन्या की रौनक़ें और बहारें हैं, अगर मेरे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या में तशरीफ़ न लाते तो न येह दुन्या होती और न इस दुन्या का वुजूद होता ।

ऐ कि तेरा वुजूद है, वज्हे क़रारे दो जहां

ऐ कि तेरी नुमूद है, ज़ीनते बज़्मे काएनात

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

(3) हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को पैग़ाम

ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते आ़मिर शअ़्बी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه कहते हैं : **अल्लाह** पाक ने (हज़रते) इब्राहीम (ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام) पर जो सहीफ़े[1] (या'नी

1 : "सहीफ़ा" लुग़त में उन अवराक़ को कहते हैं जिन पर कलामे इलाही लिखा हो, इस्तिलाह में वोह आस्मानी कलाम है जो रिसाले की शक्ल में नबियों पर आया ।

(नूरुल इ़रफ़ान, स. 977)

आस्मानी कलाम) नाज़िल फ़रमाए उन में येह भी था : बेशक तेरी औलाद में क़बाइल दर क़बाइल होंगे यहां तक कि नबिय्ये उम्मी (या'नी दुन्या में किसी से पढ़े बिग़ैर पढ़ने वाले नबी), ख़ातमुल अम्बिया (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तशरीफ़ लाएंगे। (الطبقات الکبریٰ لابن سعد ج ۱ ص ۱۳۰, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 635)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं :

ऐसा उम्मी किस लिये मिन्नत कशे उस्ताद हो

क्या किफ़ायत उस को اِقْرَاْ رَبُّكَ الْاَكْرَمُ नहीं

अल्फ़ाज़ मआ़नी : उम्मी : दुन्या में किसी से न पढ़े हुए। **मिन्नत कश :** एह़सान उठाने वाला। **किफ़ायत :** काफ़ी होना।

शर्ह़े कलामे रज़ा : अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** पाक ने ख़ुद पढ़ाया है जिस का ज़िक्र 30वें पारे की **सूरतुल अ़लक़** में मौजूद है, जब आप को ख़ुदाए पाक ने ख़ुद पढ़ाया है तो फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्यूं किसी दुन्यावी उस्ताद के एह़सान उठाएं। और आप का "**उम्मी**" होना बहुत बड़ा मो'जिज़ा है कि आप ने दुन्या में किसी से भी नहीं पढ़ा मगर आप को दुन्या के तमाम उ़लूम ह़ासिल हैं।

(4) ह़ज़रते अश्इ़या عَلَيْهِ السَّلَام को वह़ी

ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते वह़ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने अपने प्यारे नबी, ह़ज़रते अश्इ़या عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी भेजी कि मैं नबिय्ये उम्मी को भेजने वाला हूं, उस के सबब (या'नी

ज़रीए) बहरे कान और ग़ाफ़िल दिल और अन्धी आंखें खोल दूंगा, उस की पैदाइश मक्के में, हिजरत करने की जगह मदीना और उस की बादशाहत "**मुल्के शाम**" में है, मैं ज़रूर उस की उम्मत को सब उम्मतों से जो लोगों के लिये ज़ाहिर की गई बेहतर व अफ़्ज़ल करूंगा, मैं उन की किताब पर दूसरी किताबों को ख़त्म फ़रमाऊंगा और उन की शरीअ़त पर दूसरी शरीअ़तों और उन के दीन पर सब दीनों को मुकम्मल करूंगा। (دلائل النبوة لابی نعیم ص٣٦ حدیث٣٣، الخصائص الکبریٰ ج١ ص٢٣, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 635)

कलीमो नजी मसीहो सफ़ी ख़लीलो रज़ी रसूलो नबी
अ़तीक़ो वसी ग़निय्यो अ़ली सना की ज़बां तुम्हारे लिये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ على محمَّد

"मुल्के शाम की बादशाहत" की वज़ाह़त

ऐ आ़शिक़ाने आख़िरी नबी ! अभी जो ह़दीसे पाक बयान हुई इस में येह भी है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बादशाहत "**मुल्के शाम**" में होगी, इस के मुतअ़ल्लिक़ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत को **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** से एक मदनी फूल पेश करता हूं : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रत अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللهُ عَنْه) तो अव्वल मुलूके इस्लाम (या'नी सल्त़नते मुह़म्मदिय्यह के पहले बादशाह) हैं इसी की त़रफ़ तौराते मुक़द्दस में इशारा है कि مَوْلِدُهٗ بِمَكَّةَ وَمُهَاجَرُهٗ طَيْبَةَ وَمُلْكُهٗ بِالشَّامِ

या'नी "वोह नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मक्के में पैदा होगा और मदीने को हिजरत फ़रमाएगा और उस की सल्त़नत शाम में होगी।" तो अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) की बादशाही अगर्चे सल्त़नत है, मगर किस की ! **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 357)

हर सह़ाबिये नबी !	जन्नती जन्नती	सब सह़ाबियात भी !	जन्नती जन्नती
चार याराने नबी	जन्नती जन्नती	ह़ज़रते सिद्दीक़ भी	जन्नती जन्नती
और उ़मर फ़ारूक़ भी	जन्नती जन्नती	उ़स्माने ग़नी	जन्नती जन्नती
फ़ात़िमा और अ़ली	जन्नती जन्नती	हैं ह़सन ह़ुसैन भी	जन्नती जन्नती
वालिदैने नबी	जन्नती जन्नती	हर ज़ौजए नबी	जन्नती जन्नती
और अबू सुफ़्यान भी	जन्नती जन्नती	हैं मुआ़विया भी	जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

(5) ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلَام को वह़ी

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते मुह़म्मद बिन का'ब क़ुरज़ी رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं **: अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी भेजी **:** मैं तेरी औलाद से बादशाहों और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام को भेजता रहूंगा यहां तक कि मैं इस ह़रमे मोह़तरम वाले नबी صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भेजूंगा जिस की उम्मत बैतुल मुक़द्दस बुलन्द ता'मीर करेगी और वोह **"आख़िरी नबी"** है और उस का नाम **"अह़मद"** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है।

(الطبقات الکبرٰی لابن سعد ج ۱ ص ۱۲۹, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 635)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

ख़त्मे नुबुव्वत के मुतअ़ल्लिक़ ना'रे

मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा सब से आख़िरी नबी
आमिना का लाडला सब से आख़िरी नबी
ताजदारे अम्बिया सब से आख़िरी नबी
हैं शफ़ीउ़ल वरा सब से आख़िरी नबी
ए'तिक़ादे फ़ातिमा सब से आख़िरी नबी
अ़क़ीदा सब सह़ाबा का सब से आख़िरी नबी
अ़क़ीदा ग़ौसे पाक का सब से आख़िरी नबी
शैख़ो शाब ने कहा सब से आख़िरी नबी
है अ़क़ीदए रज़ा, सब से आख़िरी नबी

अह़मदे मुज्तबा सब से आख़िरी नबी
शाहे हर दो सरा सब से आख़िरी नबी
हैं ह़बीबे किब्रिया सब से आख़िरी नबी
आ़सियों का आसरा सब से आख़िरी नबी
है यक़ीने आ़इशा सब से आख़िरी नबी
अ़क़ीदा अहले बैत का सब से आख़िरी नबी
औलिया ने भी कहा सब से आख़िरी नबी
बच्चा बच्चा बोल उठा सब से आख़िरी नबी
ना'रा है अ़त्तार का, सब से आख़िरी नबी

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

17 रबीउ़ल अव्वल 1444 सि.हि.
14-10-2022

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक्तबतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घरों में ह़स्बे तौफ़ीक़ रिसाले या मदनी फूलों के पेम्फ़लेट हर माह पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (جمع الجوامع)

मआख़िज़ो मराजेअ़

کتاب	مطبوعہ
قرآنِ مجید	
کنزالعرفان	مکتبۃ المدینہ
تفسیر طبری	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تاویلات اہل السنۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ
صراط الجنان	مکتبۃ المدینہ
بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مسلم	دارالکتاب العربی بیروت
ابوداؤد	داراحیاء التراث العربی بیروت
ترمذی	دارالفکر بیروت
ابن ماجہ	دارالمعرفۃ بیروت
دارمی	دارالکتاب العربی بیروت
مسند احمد	دارالفکر بیروت
معجم کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت
معجم اوسط	دارالکتب العلمیۃ بیروت
معجم صغیر	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مسند شامیین	مؤسسۃ الرسالۃ بیروت
مستدرک	دارالمعرفۃ بیروت
مسند ابویعلی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الفردوس بماثور الخطاب	دارالکتب العلمیۃ بیروت
شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	دارالکتب العلمیۃ بیروت
السنۃ	دار ابن حزم بیروت
الاوائل	دارالفرقان بیروت

کتاب	مطبوعہ
ذکر الموت	المکتبۃ العصریۃ بیروت
کنز العمال	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الاستذکار	داراحیاء التراث العربی بیروت
شرح مسلم	دارالکتب العلمیۃ بیروت
اشعۃ اللمعات	
نزہۃ القاری	
مراٰۃ	
شمائل ترمذی	داراحیاء التراث العربی بیروت
دلائل النبوۃ للبیہقی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
دلائل النبوۃ لابی نعیم	المکتبۃ العصریۃ بیروت
خصائص کبریٰ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
شرح شفا	دارالکتب العلمیۃ بیروت
شانِ حبیب الرحمٰن	
طبقات کبریٰ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تاریخ بغداد	دارالکتب العلمیۃ بیروت
ابن عساکر	دارالفکر بیروت
مختصر تاریخ دمشق	دارالفکر بیروت
الکامل	دارالکتب العلمیۃ بیروت
فتاوٰی عالمگیری	دارالفکر بیروت
فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن
شرح الصدور (اردو)	مکتبۃ المدینہ
منتخب حدیثیں	مکتبۃ المدینہ
حدائقِ بخشش	مکتبۃ المدینہ
الملفوظ	مکتبۃ المدینہ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	ईमान की फ़िक्र न करना तश्वीश नाक है	11
ह़ज़रते जिब्रील सलाम कहते हैं (वाक़िआ़)	1	सुब्ह़ मोमिन तो शाम को काफ़िर	11
اَلْحَمْدُ لِلّٰه हम आख़िरी नबी के उम्मती हैं	3	एक ग़ैबी बुज़ुर्ग का अनोखा वाक़िआ़	13
अहम तरीन फ़र्ज़	3	ईमान अफ़्रोज़ मौत (मदनी बहार)	16
ख़ातम का मत़लब	5	40 ह़दीसें पहुंचाने की फ़ज़ीलत	18
जानवर भी आख़िरी नबी मानते हैं (वाक़िआ़)	5	ख़त्मे नुबुव्वत के बारे में 40 ह़दीसें	19
		नूरानी महल की आख़िरी ईंट	19
अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की अहम्मिय्यत	7	ख़ातमुन्नबिय्यीन के मा'ना	21
कोई दलील नहीं मांगी जाएगी	8	छे फ़ज़ीलतें	21
झूटे नबी से मो'जिज़ा त़लब करना कैसा ?	8	मैं आ़क़िब हूं	22
		सारे नबियों के सरदार	23
لَا نَبِیَّ بَعْدِیْ	9	ख़ातमुन्नबिय्यीन	23
ईमान की सलामती की फ़िक्र न करने का नुक़्सान	10	आख़िरुल मसाजिद के मा'ना	24
		जन्नत में दाख़िल हो जाओ	24

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

उ़न्वान	सफ़ह़ा
मेरे बा'द हरगिज़ कोई नबी नहीं	24
सब से पहले जन्नत में जाने वाली उम्मत	26
ख़ूबियों भरी मुख़्तसर बात	26
सब नबियों से अफ़्ज़ल होने का सबब (वाक़िआ़)	27
30 झूटे नबी होंगे	28
शर्हे ह़दीस	28
मौला अ़ली की शाने अ़ज़मत निशान	29
तू ने सच कहा	31
एक ख़्वाब की ता'बीर	31
उन के आगे नूर दौड़ता होगा	31
क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ आख़िरी नबी कहेगी	32
अगर मुह़म्मद न होते तो मैं तुम्हें न बनाता	32
तौरैत शरीफ़ में ज़िक्रे ख़ैर	34

उ़न्वान	सफ़ह़ा
सब से पहले और सब से आख़िरी	34
पहले और आख़िरी नबी	35
मेरे हुज़ूर के लब पर اَنَا لَهَا होगा	36
कुछ न छुपाया मगर..... (वाक़िआ़)	36
सह़ाबा और ताबिईन के 5 इर्शादात	38
(1) दोनों कन्धों के दरमियान तह़रीर	38
(2) वोह जो न हों तो कुछ न हो	38
(3) ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को पैग़ाम	39
(4) ह़ज़रते अश्इ़या عَلَيْهِ السَّلَام को वह़ी	40
"मुल्के शाम की बादशाहत" की वज़ाह़त	41
(5) ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام को वह़ी	42
ख़त्मे नुबुव्वत के मुतअ़ल्लिक़ ना'रे	43

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ، وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن۔

एक खजूर का वबाल

बैतुल मुक़द्दस में कुछ लोग नफ़्ल नमाज़ पढ़ने के बा'द बैठे हुए थे कि एक बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : इब्राहीम बिन अद्हम 40 दिन से ज़ौक़े इबादत से महरूम हैं, येह सुनते ही आप ने अ़र्ज़ की : ह़ज़रत ! आप सच कहते हैं, मगर किस सबब से मेरा ज़ौक़े इबादत छिन गया ? फ़रमाया : तुम ने फुलां दिन बसरे में खजूरें ख़रीदी थीं, वहां बेचने वाले की एक खजूर गिरी हुई थी तुम ने अपनी समझ कर उठाई और रख ली (वोही खजूर तुम्हारे ज़ौक़े इबादत छिन जाने का बाइस बन गई) । ह़ज़रते इब्राहीम बिन अद्हम رحمۃ اللہ علیہ ने एक खजूर मुआ़फ़ करवाने के लिये बसरे का सफ़र इख़्तियार किया और मुआ़फ़ करवा ली।

(तज़्किरतुल औलिया, जि. 1,स. 102 से ख़ुलासा)